शनिवार व्रत कथा — दशरथ और शनि का चयनित पूर्ण प्रसंग

Shanivar Vrat Katha — Complete Selected Dasharatha Account

Source: Vrataraja — 1897 Khemraj controlling Shanivar account, physical scans 740–744. Also compared: Vrataraja — catalogued 1884 Shri Venkateshwar complete comparison, physical scans 923–927; 1897 metadata — edition identity and CC0 provenance.

Valkala's own retelling of the katha in Vrataraja, 1897 Khemraj Sanskrit print, Shanivaravratakatha 1–64, physical scans 740–744, not a transcription of the original text.

रोहिणी का संकट और दशरथ के दो वर

KATHA 1–21

ईश्वर रघुवंश के राजा दशरथ की कथा कहते हैं। स्रोत उनके शासन को सात द्वीपों तक विस्तृत बताता है। ज्योतिषी सूचना देते हैं कि कृत्तिका के अंत में स्थित शनि रोहिणी की ओर बढ़ रहे हैं। रोहिणी के शकट का भेदन होने पर बारह वर्षों के अकाल का भय बताया जाता है। लोग व्याकुल होते हैं; देवता और ऋषि भी आशंकित कहे जाते हैं। यह कथा की ब्रह्मांडीय आशंका है, आज के मौसम, भोजन-संकट या किसी व्यक्ति की कुंडली का प्रमाण नहीं।

दशरथ वसिष्ठ से सलाह लेते हैं। ऋषि इस संकट को देवताओं के लिए भी कठिन बताते हैं। राजा दिव्य धनुष और अस्त्र लेकर रथ पर नक्षत्र-मंडल की ओर जाते हैं। स्वर्ण और रत्नों से सजा रथ, उजले घोड़े तथा राजा का तेज वर्णित है। रोहिणी के पास वे शनि के सामने धनुष तैयार करते हैं। शनि उनकी निर्भीकता देखकर हँसते और उनसे बात करते हैं। वे अपनी दृष्टि का प्रभाव देवताओं, मनुष्यों और अन्य प्राणियों पर बताकर राजा के साहस की प्रशंसा करते हैं।

शनि वर माँगने को कहते हैं। दशरथ पहले प्रार्थना करते हैं कि जब तक यह जगत रहे, रोहिणी का भेदन न हो। शनि इसे स्वीकार करते हैं। फिर राजा बारह-वर्षीय अकाल न आने का दूसरा वर माँगते हैं। स्रोत स्पष्ट रूप से दो वर पाने की बात कहता है। राजा प्रसन्न होकर धनुष नीचे रखते और हाथ जोड़ते हैं। यह साहस और प्रजा के लिए चिंता का पौराणिक प्रसंग है, अस्त्र से ग्रहों को रोकने की विधि या वास्तविक अकाल से सुरक्षा की गारंटी नहीं।

Ishvara relates the account of Dasharatha of the Raghu line, whose rule the source extends across seven continents. Astrologers warn that Shani, at the end of Krittika, approaches Rohini. Piercing Rohini's cart is associated with twelve years of famine. People become distressed, and gods and sages are described as fearful. This cosmic threat belongs to the story, not evidence about current weather, food shortages or a person's horoscope.

Dasharatha consults Vasishtha, who describes a danger difficult even for the gods to prevent. Taking a divine bow and weapons, the king rides into the stellar realm. His golden, jewelled chariot, white horses and radiance are described. Near Rohini he prepares his bow before Shani. Shani laughs at his fearlessness, speaks of the effect of his gaze on gods, humans and other beings, and praises the king's courage.

Invited to ask a boon, Dasharatha first asks that Rohini not be pierced while the world remains. Shani agrees. The king then asks a second boon against the twelve-year famine. The source explicitly states that he receives two boons. Delighted, he puts down his bow and folds his hands. This sacred account of courage and concern for his people is neither a method of stopping planets with weapons nor a guarantee against actual famine.

दशरथ की स्तुति और सभी प्राणियों के लिए प्रार्थना

KATHA 22–36

दशरथ शनि की स्तुति करते हैं। वे उनके गहरे नील वर्ण, लंबे शरीर, घने रोम, नीलम और नीलकमल जैसी छवि को प्रणाम करते हैं। स्रोत शितिकंठ से मिलती छवि, भूख, सूखे शरीर, भयावह रूप, लंबे नेत्र और कठोर प्रभाव का वर्णन करता है। शनि सूर्य-पुत्र, तपस्वी और ज्ञान से जुड़े दिव्य रूप में संबोधित होते हैं। उनकी दृष्टि से देवता, असुर, मनुष्य, पशु-पक्षी और राज्य प्रभावित होने की बात कही जाती है। यह स्तुति का धार्मिक चित्रण है, किसी व्यक्ति की कठिनाई का ग्रह-दोष तय करने का आधार नहीं। यहाँ स्तुति के पूरे आशय का मूल गद्य है, अलग संस्कृत स्तोत्र का पाठ या शनि आरती नहीं।

इस प्रशंसा से शनि प्रसन्न होते हैं और फिर वर माँगने को कहते हैं। दशरथ अब केवल रोहिणी और अकाल नहीं, सभी प्राणियों के लिए निवेदन करते हैं: उनकी पीड़ा दूर रहे। शनि अपने ग्रह-संबंधी प्रभाव और कर्म के संदर्भ में उत्तर देते हैं। वे आराधना और इस स्तुति से जुड़े संरक्षण के वचन कहते हैं। स्रोत में यह उत्तर भक्ति की शर्तों से जुड़ा है; इसे पहले दो वरों जैसा बिना शर्त सभी के लिए ग्रह-प्रभाव समाप्त करने का कथन नहीं बनाया गया है।

स्तुति सुनने या कहने के समय और उससे पीड़ा न होने का दावा आता है। इसे धार्मिक आश्वासन के रूप में ही पढ़ा जाता है, उपचार, दुर्घटना से बचाव या आर्थिक सफलता का वादा नहीं। वास्तविक बीमारी, गरीबी और संकट को किसी की कम भक्ति या खराब कर्म का प्रमाण नहीं कहा जाता। इस आगे के संवाद में राजा आराधना की विधि जानना चाहते हैं; कथा अब उसी प्रश्न का उत्तर देती है।

Dasharatha praises Shani's deep blue colour, tall body, coarse hair and sapphire- and blue-lotus-like appearance. The source invokes a likeness to Shitikantha, hunger, a dry body, a fearsome form, long eyes and severe influence. Shani is addressed as Surya's son and associated with austerity and knowledge. His gaze is said to affect gods, Asuras, humans, animals, birds and kingdoms. This religious portrait is not a basis for diagnosing a person's hardship as planetary affliction. The whole praise is condensed into original prose, not presented as a separate Sanskrit stotra or Shani aarti.

Pleased, Shani again invites a boon. Dasharatha now appeals for all beings, not only Rohini and famine: may they be free of suffering. Shani answers in terms of planetary influence and karma, offering protection associated with worship and this praise. The answer has devotional conditions; it is not changed into an unconditional abolition of every planetary effect like the first two specific boons.

The source discusses times for hearing or reciting the praise and claims freedom from distress. This remains religious assurance, not treatment, accident prevention or a promise of financial success. Actual illness, poverty or distress is not proof of insufficient devotion or bad karma. The king then asks how worship is performed, and the account proceeds to answer.

कथा के भीतर आराधना का वर्णन

KATHA 37–58

दशरथ पूछते हैं कि किस विधि से आराधना करने पर शनि प्रसन्न होते हैं। उत्तर श्रावण के शनिवारों से जुड़ा

है। स्रोत तेल से स्नान, संयम और पूजा की तैयारी बताता है। शमी उपलब्ध न हो तो अश्वत्थ का उल्लेख आता है। वृक्ष के पास चित्र या प्रतिमा रखकर धूप, दीप और भोजन-अर्पण का वर्णन है। सात प्रदक्षिणाएँ, सात शनिवार और समापन की बातें आती हैं। यह कथा का ऐतिहासिक पूजा-संवाद है; इससे आज के हर घर के लिए निश्चित संख्या, वृक्ष पर सामग्री डालना या कठिन नियम अनिवार्य नहीं होते।

समापन में शमी या अश्वत्थ का प्रतीक और लोहे की प्रतिमा वर्णित है। इस स्रोत की प्रतिमा दो भुजाओं वाली, भैंसे पर बैठी तथा दंड और पाश लिए हुए है। इसे किसी अन्य आरती के चार-भुज रूप से नहीं मिलाया गया है। उसके वस्त्र, शरीर, दीप, मंत्र, अर्पण और पूजा की बातें मूल प्रसंग के रूप में संक्षेप में आती हैं। यहाँ किसी मंत्र का अधूरा उद्धरण, प्रतिमा खरीदने की मांग या औपचारिक विधि का विकल्प नहीं दिया जाता।

भोजन, दक्षिणा, ब्राह्मणों को खिलाने और बछड़े के साथ काली गाय के दान का भी स्रोत में वर्णन है। इन्हें पाठक को पशु खरीदने, संभालने या दान करने का निर्देश नहीं बनाया जाता। आगे कई जन्मों के मंगल, सौंदर्य, संतान, संपत्ति और ग्रह-पीड़ा से राहत के फल आते हैं। जन्मराशि और अन्य स्थानों पर शनि का प्रभाव तथा देवताओं की शक्ति से संबंधित बड़े दावे भी हैं। ये स्रोत की धार्मिक और ज्योतिषीय भाषा हैं, कुंडली का विश्लेषण या सत्यापित लाभ नहीं।

शनि अपना उपदेश समाप्त करते हैं। दशरथ हाथ जोड़कर उस संवाद का सम्मान करते हैं। कथा भय से आराधना की ओर बढ़ती है, लेकिन किसी की पीड़ा को उसका दोष कहना, परिवार के लिए सामान या पशु खरीदना, उपवास करना अथवा जीवन की समस्याओं का उपचार इस विधि में ढूँढ़ना इस पुनर्कथन का निष्कर्ष नहीं।

Dasharatha asks what form of worship pleases Shani. The answer concerns Saturdays in Shravana. The source describes an oil bath, restraint and preparation, mentioning Ashvattha when Shami is unavailable. An image near the tree, incense, lamps and food offerings follow. Seven circumambulations, seven Saturdays and a concluding observance are described. This historical worship dialogue does not impose a fixed count, depositing materials on a tree or demanding rules on every present-day household.

The conclusion describes a Shami or Ashvattha representation and an iron image. This witness specifies two arms, a buffalo mount, a staff and a noose. It is not blended with another aarti's four-armed image. Clothing, bodily appearance, a lamp, mantras, offerings and worship are condensed within their narrative setting. No incomplete sacred formula, required idol purchase or substitute formal manual is provided.

Food, gifts, feeding Brahmins and donating a black cow with a calf also appear. These are not instructions to readers to buy, handle or donate animals. The source goes on to claim auspiciousness across births, beauty, children, wealth and relief from planetary distress. It discusses Shani's positions in a birth chart and makes extensive claims about divine power. This is religious and astrological discourse within the source, not horoscope analysis or verified benefits.

Shani finishes his teaching, and Dasharatha honours the exchange with folded hands. The account moves

from fear to worship, but this retelling does not blame sufferers, require household or animal purchases and fasting, or direct readers to treat life's problems through this method.

दशरथ की वापसी और अंतिम फल-वचन

KATHA 59–64

दशरथ नगर लौटते हैं और शनि की आराधना करते हैं। स्रोत श्रावण के शनिवारों में उस पूजा से शनि के प्रसन्न होने का वर्णन करता है। प्रातः यह प्रसंग पढ़ने से सुख और मनोकामना पूरी होने के वचन आते हैं। स्त्री और पुरुष दोनों के व्रत करने और मुक्ति से जुड़ा फल कहा जाता है। ये कथा के समापन की धार्मिक प्रशंसा हैं, वर्तमान पाठक को निश्चित लाभ का आश्वासन नहीं।

अंत में स्रोत अलग सामाजिक वर्णों के लिए अलग फल कहता है: ब्राह्मण के लिए वेद-ज्ञान, क्षत्रिय के लिए राज्य, वैश्य के लिए आर्थिक लाभ और शूद्र के लिए सुख। यह पुराने ग्रंथ का सामाजिक ढाँचा है, जन्म के अनुसार आज के किसी व्यक्ति की शिक्षा, पेशा, आध्यात्मिक अधिकार या सम्मान तय करने का नियम नहीं। सबके साथ बराबर सम्मान का व्यवहार इस पुनर्कथन की सीमा है; किसी को इस पाठ या प्रार्थना से अलग नहीं किया जाता।

आगे बेटी या बेटे की इच्छा, कामना और मुक्ति से जुड़े फल-वचन आते हैं। संतान या समृद्धि की गारंटी नहीं दी जाती और संतान न होने या दुख के लिए व्यक्ति की आस्था को दोष नहीं दिया जाता। अंतिम पदों के बाद शनिवार-व्रत कथा का अपना समापन है। इसके तुरंत बाद शुरू होने वाला व्यतीपात-व्रत एक अलग प्रसंग है और यहाँ शामिल नहीं।

इस प्रकार रोहिणी की आशंका, दशरथ का साहस, दो प्रारंभिक वर, स्तुति, व्यापक प्रार्थना, पूजा-संवाद, घर-वापसी और अंतिम धार्मिक कथन सहित चयनित पूरा प्रसंग समाप्त होता है। यह पूर्ण गद्य पुनर्कथन है, संस्कृत पदों का अक्षरशः पाठ नहीं। इसमें न विक्रमादित्य की अलग कथा जोड़ी गई है और न अलग माँगी गई शनि आरती को पूरा मान लिया गया है।

Dasharatha returns to his city and worships Shani. The source describes Shani's pleasure at this worship on Shravana Saturdays. Reading the account in the morning is associated with happiness and fulfilment of wishes. Both women and men are mentioned as observing the vow, with liberation among the stated benefits. This is concluding religious praise, not an assurance of definite results for present readers.

The source assigns different benefits to social varnas: Vedic knowledge for a Brahmin, a kingdom for a Kshatriya, financial benefit for a Vaishya and happiness for a Shudra. This historical social framework does not determine a present person's education, occupation, spiritual rights or dignity by birth. Equal respect is a boundary of this retelling; nobody is excluded from this reading or prayer.

Further claims concern a daughter or son, desired objects and liberation. Children and prosperity are not guaranteed, and childlessness or distress is not blamed on a person's faith. The final verses are followed by the Saturday katha's own colophon. The Vyatipata vow beginning immediately afterwards is a separate account and is excluded.

The complete selected account thus includes the Rohini warning, Dasharatha's courage, two initial boons, praise, broader appeal, worship dialogue, return and final religious claims. This is a whole condensed prose retelling, not a literal Sanskrit recitation. Neither the separate Vikramaditya story nor the separately requested Shani aarti is treated as completed by it.